झारखण्ड राज्य सहकारी दुग्ध उत्पादक महासंघ लिमिटेड

मेधा दुग्धवाणी

अंक -11 जुलाई-सितम्बर 2019

प्रिय पाठकगण,

झारखण्ड मिल्क फेडरेशन की ओर से आप सभी पाठकगणों को दीपावली एवं छठ महापर्व की हार्दिक शुभकामनाए।

सभी जगहों की भांति झारखण्ड राज्य में भी खेती बाड़ी के साथ-साथ पशुधन पर भी बहुत ध्यान दिया जा रहा है क्योंकि पशुधन को अधिकतर किसान अपने अतिरिक्त आय के स्रोत के रूप में देखते हैं। दुधारू पशुओं से अधिक एवं गुणवत्तायुक्त दूध प्राप्त करने हेतु पशुओं का स्वस्थ्य रहना जरुरी है, इसके लिए आवश्यक है कि पशुपालक अपने पशुओं को संक्रामक रोगों से बचाव हेतु समय- समय पर डीवार्मिंग एवं टीकाकरण कराये क्योंकि संक्रमण से होने वाले रोग प्राणघातक भी हो सकते है। साथ ही उत्पादन लागत को कम करने के लिए अधिक से अधिक हरा चारा लगायें ताकि ज्यादा से ज्यादा मुनाफा हो सके।

इस अंक को प्रकाशित करते हुए मुझे बेहद प्रसन्नता हो रही है और मैं आशा करता हूँ कि आप सभी झारखण्ड राज्य में डेरी व्यवसाय की उन्नति एवं समृद्धि में अपना भरपूर योगदान दें।

प्रबंध निदेशक
झारखण्ड मिल्क फेडरेशन

पशुओं को स्वस्थ्य कैसे रखें ?

- पशु तथा पशु शाला की सफाई और स्व्च्छता बनायें।
- पशुओं को रहने के लिए उपयुक्त बाड़े की व्यवस्था करें जिसमें हवा के आवागमन का उचित प्रबंधन हो।
- पर्याप्त हरा और सूखा चारा उपलब्ध करायें।
- अच्छी गुणवत्तायुक्त पशुआहार एवं क्षेत्र विशेष खनिज मिश्रण खिलायें।
- दूषित एवं फफूंद मुक्त चारा उपलब्ध करायें।
- साफ एवं पीने योग्य पानी उपलब्ध करायें।
- नियमित रूप से एवं ससमय डीवार्मिंग एवं टीकाकरण करवायें।

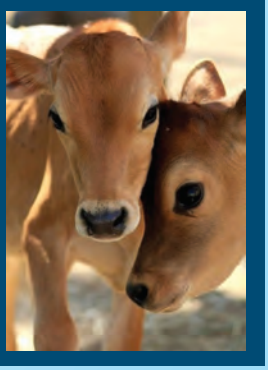

पशुपालकों हेतु आगामी तीन माह के लिए ध्यान देने वाली महत्वपूर्ण बातें

माह - अक्टूबर

- बरसात के बाद सभी पशुओं में डिवार्मिंग अवश्य करायें।
- अधिक चारा उत्पादन प्राप्त करने हेतु उन्नत चारा बीज का चुनाव करें। बरसात के बाद जब चारा अधिक मात्रा में बचा हुआ हो तो उसे साइलेज बना कर भविष्य के लिए सुरक्षित करें।
- गाय या भैंस को समय से गर्मी में लाने के लिए खनिज मिश्रण अवश्य खिलायें।
- रबी मौसम में लगाये जाने वाले चारा फसलों की बुआई करें। विस्तृत विवरण निम्न तालिका में अंकित है -

चारा फसल	उपयुक्त किस्म	बीज दर (प्रति एकड़)	कटाई का समय	अतिरिक्त
जई	केन्ट, यू.पी.ओ-212, जे.एच.ओ.-822	25-30 किग्रा	पहली कटाई-बुआई के 50 से 55 दिन बाद दूसरी कटाई 50 प्रतिशत फूल आने पर	पहली कटाई में अधिक उपज प्राप्त करने हेतु चारा सरसों के बीज को मिला कर बुआई करें।
बरसीम	जे.बी.-1, वरदान, बी.एल.-1	8-10 किग्रा	पहली कटाई-बुआई के 45 से 50 दिन बाद बाद की कटाई – 25 से 30 दिनों के अंतराल पर	
चारा सरसों	चायनीज कैबेज	1.5 – 2 किग्रा	बुवाई के 45 से 50 दिन बाद	
मक्का	अफ्रीकन टाल, विजय कम्पोजिट, प्रताप मक्का चरी-6	12-15 किग्रा	50 से 55 दिन बाद बाली आने के समय	

उन्नत किस्म का चारा बीज प्राप्त करने हेतु झारखण्ड मिल्क फेडरेशन के मोबाईल संख्या 7280843465 अथवा 8709479341पर संपर्क करें।

माह - नवम्बर

- इस माह में तापक्रम में परिवर्तन होने के कारण पशुओं को सर्दी से बचाने के उपाय करें, रात में पशुओं को खुले में न बांधे।
- पशुओं में विभिन्न संक्रामक रोगों जैसे खुरपका-मुहँपका, गलघोंटू, लंगड़ा बुखार का टीकाकरण सुनिश्चित करें।
- थनैला रोग से बचाव के उपाय करें।
- पशुओं को खनिज मिश्रण निर्धारित मात्रा में दाने या बांटे में मिलाकर दें ।
- पशु आहार में हरे चारे की मात्रा नियंत्रित ही रखें व सूखे चारे की मात्रा को बढ़ा कर दें। पशुओं को अफरा से बचाने हेतु दलहनी फसलों को निश्चित रूप से सूखे चारे के साथ मिलाकर दें।
- बहुकृतूजीवी घासों की कटाई कर लें। इसके बाद ये सुप्तावस्था में चली जाती है जिससे अगली कटाई तापमान बढ़ने पर फरवरी- मार्च में ही प्राप्त होती है।
- बरसीम व रिजका की बुआई माह के मध्य तक अवश्य पूरी कर लें।

माह - दिसम्बर

- पशुओं का सर्दी से बचाव का उचित प्रबन्धन करें। रात में पशुओं को अन्दर गर्मी वाले स्थान जैसे कि छत के नीचें अथवा सूखी घास की छप्पर के नीचें बांधे।
- यदि वातावरण साफ हो और बादल नहीं हो तो पशुओं को खिलाने के पश्चात अतिरिक्त बचे हुए चारे को छाये में सुखाकर "हे" के रूप में संरक्षित करें।
- धान की कटाई के बाद पुवाल को भविष्य में पशुओं को खिलाने के लिए संरक्षित करें।
- बीज बुआई के 50-55 दिन के बाद बरसीम की कटाई एवं 55-60 दिन बाद मक्का एवं जई की कटाई कर चारे के लिए उपयोग करें। इसके पश्चात बरसीम की कटाई 25-30 दिन के अंतराल पर करते रहे।
- दिसम्बर की चटकीली धूप में चारा प्रदान करने वाले वृक्षों की छंटाई के बाद पत्तियों आदि को छाया में सुखाकर गर्मी के मौसम में चारा की कमी की स्थिति में पशुओं को खिलाने के लिए संग्रहित करें।

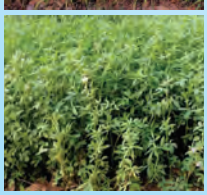
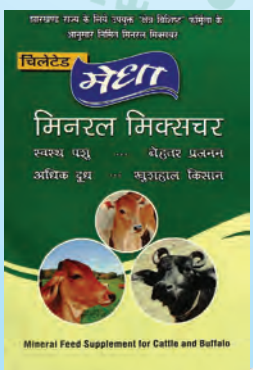

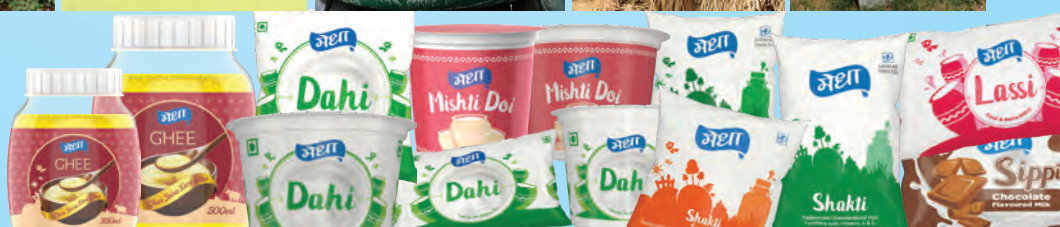

क्या आप जानते है ?

- मानव मस्तिष्क में 78 से 80 % पानी होता है।
- जिराफ अपनी जीभ से अपना कान भी साफ कर सकता है।
- बिल्ली अपने पूरे जीवन का 66 % सिर्फ सोने में बीता देती है।
- शुतुरमुर्ग की आँख उसके दिमाग से बड़ी होती है।
- मानव शरीर की सबसे छोटी हड्डी कान में होती है।

गाजर घास : दूध का दुश्मन
इसे पशुओं को खाने अथवा खिलाने से बचायें

फसलों में खरपतवार उगने के कारण फसलों के उत्पादन तथा गुणवत्ता में बहुत कमी होती है। कई खरपतवार बीजों के अतिरिक्त अपने अन्य कायिक भागों से भी वंश वृद्धि करते है अतः खरपतवार नियंत्रण अत्यंत आवश्यक सस्य क्रिया है। इन्ही खरपतवारों में एक महत्वपूर्ण खरपतवार है गाजर घास। इनमें फूल और बीज जल्दी तथा अधिक संख्या में बनते है एवं परिपक्वता भी जल्दी आती है। गाजर घास पर लगातार किये गये अध्ययन से ये सामने आया कि गाजर घास न केवल फसलों के साथ उगकर पोषक तत्वों, जल, प्रकाश एवं स्थान आदि के लिए प्रतिस्पर्धा करता है बल्कि ये फसलों के लिए हानिकारक रोग व कीटों को शरण देकर भी फसलों को क्षति पहुंचाते है। इसके साथ ही यदि इसे पशुओं को खिलाया गया तो उनके दूध में अवांछनीय गंध उत्तपन्न करने का कारण भी बनते है। गाजर घास का पूर्णतया उन्मूलन करना कठिन कार्य है क्योंकि इनका विस्तार एक खेत से दूसरे खेत में तेजी से होता है। यदि खेत में उगने वाले इन खरपतवारों को समय से नियंत्रित नहीं किया जाये तो मेहनत व्यर्थ जाएगी अतः खरपतवारों का उचित समय पर सफलतापूर्वक प्रबंधन लागत को ध्यान में रखते हुए करना चाहिए। मेधा दुग्धवाणी के पिछले कई अंको में हमने गाजर घास के दुष्परिणामों के बारे में चर्चा की है। आप सभी इसके प्रति सचेत रहे एवं इसके निवारण हेतु महत्वपूर्ण कदम उठायें। ग्रामीण स्तर पर गाजर घास को खत्म करने हेतु झारखण्ड मिल्क फेडरेशन द्वारा गाजर घास उन्मूलन कार्यक्रम चलाया जा रहा है इस कार्यक्रम का हिस्सा बन गाजर घास के प्रति जागरूक बनें। इस विषय से सम्बंधित अधिक जानकारी के लिए झारखण्ड मिल्क फेडरेशन के मोबाईल संख्या 7280843465 अथवा 8709479341पर संपर्क करें।

डेंगू / चिकनगुनिया के प्रति जागरुकता एवं सावधानियाँ

अपने घरों के आस पास साफ-सफाई रखें। बर्तन, प्रयोग में न आने वाली बोतले, टिन, डब्बा इत्यादि को ढककर रखें।

खाली पड़े बर्तनों में पानी इकट्ठा न होने दे एवं सप्ताह में कम से कम 2 दिन सफाई जरुर करें।

सोते समय मच्छरदानी का प्रयोग जरुर करें।

एडिस मच्छर मुख्यतः शरीर के निचले हिस्से में कटता है अतः शरीर को पूरी तरह से ढकने वाला फूल बाजु का शर्ट, फूल पैंट एवं मोजा पहने।

- ज्यादा से ज्यादा पानी पीयें एवं तरल पदार्थ का सेवन करें।
- नारियल पानी, फल का जूस , छाछ इत्यादि का सेवन करें।
- कोल्ड ड्रिंक्स का सेवन बिलकुल भी न करें।
- एक सामान्य व्यक्ति को जितने पानी की आवश्यकता होती है डेंगू होने पर उससे ज्यादा पानी पियें।

सावधानियाँ

बुखार होने पर उसे अनदेखा न करें एवं जल्द से जल्द किसी डॉक्टर की सालाह लें |

जे.एम.एफ. द्वारा विगत तिमाही में किये गये महत्वपूर्ण कार्य

जे.एम.एफ. द्वारा 20 जुलाई 2019 को एक दिवसीय कार्यशाला "डेरी सहकारिता से ग्रामीण संवृद्धि" का आयोजन खेलगांव में किया गया जिसमे मेधा डेयरी के क्रियाकलापों को समझाने के लिए प्रदर्शनी स्टॉल लगाया गया।

झारखण्ड सरकार द्वारा एकदिवसीय कार्यशाला " मिट्टी का डॉक्टर" का आयोजन 21 अगस्त 2019 को किया गया जिसमें जे.एम.एफ. द्वारा पारंपरिक पशु चिकित्सा पद्धति एवं दुग्ध व दुग्ध जन्य पदार्थ के प्रदर्शनी स्टॉल लगाये गये ।

झारखण्ड मिल्क फेडरेशन के कार्यकलापो एवं गतिविधियों को समझने हेतु विभिन्न संगठनों से आये अधिकारियों का मेधा डेयरी एवं सम्बंधित गाँव में भ्रमण ।

झारखण्ड मिल्क फेडरेशन द्वारा 23 सितम्बर 2019 को राँची के राजकीयकृत मध्य विद्यालय में स्कूली बच्चों को फ्लेवर्ड मिल्क का वितरण कर राष्ट्रीय पोषण माह मनाया गया।

जे.एम.एफ. द्वारा मेधा डेयरी होटवार प्रांगण में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी विश्वकर्मा पूजा का आयोजन किया गया।

1746/05/19• kailashpaper.org • 92631 80313 / 14 / 15

Published by: **Jharkhand State Co-operative Milk Producers' Federation Ltd.**

Ranchi - 834004, Tel: 0651-2443055, Website: www.jmf.coop